इकाई 22 राजनीतिक दलों का उदय

इकाई की रूपरेखा

22.0 उद्देश्य
22.1 प्रस्तावना,
22.2 मेजी शासकों के अधीन संवैधानिक सरकार
    22.2.1 राजनीतिक दलों की स्थापना
    22.2.2 समान स्वार्थ वाले समूह एवं राजनीतिक दल
22.3 कम्युनिस्ट पार्टी की स्थापना
22.4 दल मन्त्रि परिषद की व्यवस्था
22.5 राजनीतिक दलों का पतन
    22.5.1 बाह्य एवं आन्तरिक कारण
    22.5.2 राष्ट्रीय रक्षा राज्य (नेशनल डिफेंस स्टेट)
22.6 सारांश
22.7 बोध प्रश्नों के उत्तर

22.0 उद्देश्य

इस इकाई का अध्ययन करने के बाद :

- आपको यह ज्ञान हो जायेगा कि पुनर्स्थापन के बाद कैसे राजनीतिक संगठनों की स्थापना हुई और वे फिर कैसे राजनीतिक दलों में विकसित हुए,
- राजनीतिक दलों की स्थापना तथा संविधान के दायरे में उनकी क्या स्थिति थी—इनकी जानकारी आपको हो जायेगी,
- राजनीतिक दलों तथा मेजी शासकों एवं नौकरशाही तन्त्र के बीच संबंधों का ज्ञान आपको होगा,
- दल सरकार के उत्थान एवं पतन के विषय में भी आप बता सकेंगे, और
- युद्ध पूर्व जापान में आपको राजनीतिक लोकतन्त्र का भी ज्ञान हो जायेगा।

22.1 प्रस्तावना

प्रथम विश्व युद्ध के बाद जापान में राजनीतिक दलों के उत्थान के विषय में कोई भी विवेचना करते समय हमें उन प्रक्रियाओं पर ध्यान देना होगा जिनके कारण राजनीतिक दलों की स्थापना हुई, और उन संबंधों का भी जो राजनीतिक दलों तथा दूसरे राजनीतिक तौर पर शक्तिशाली गुटों के बीच स्थापित हुए। इन संबंधों की विवेचना करना अपरिहार्य है क्योंकि इन संबंधों ने ही जापान में विकसित होने वाली संवैधानिक व्यवस्था की ताकत एवं सीमा को निश्चित किया। इस तरह से इस इकाई में राजनीतिक दलों की स्थापना के कारणों तथा इन राजनीतिक दलों ने राज्य तन्त्र में जो स्थिति प्राप्त की उसके विषय पर ध्यान केन्द्रित किया गया है।

22.2 मेजी शासकों के अधीन संवैधानिक सरकार

सन् 1889 में मेजी सम्राट ने अपनी जनता के लिये एक ऐसे संविधान का अनुमोदन किया जिसने संवैधानिक सरकार के लिये एक आधारशिला रखी। जिस प्रक्रिया के द्वारा इस संविधान के प्रारूप को तैयार किया गया उसका और इसके विशेष गुणों का विवरण पहले की इकाई में हो चुका है। यहां पर इतना बता देना ही पर्याप्त होगा कि संविधान का निर्माण उस मेजी शासक तन्त्र के द्वारा किया गया था जो अपनी सोच में घोर लोकतन्त्र विरोधी था। मेजी शासक लोकप्रिय निर्वाचित सरकार के विचार के प्रति एक अविश्वास की भावना रखते थे और उनका विचार था कि इस तरह की व्यवस्था को लागू कर दिये जाने से सामाजिक एवं राजनीतिक अराजकता पैदा हो जायेगी। इन सबके बावजूद भी उन्होंने एक संविधान के प्रारूप को तैयार कराया और जिसके अन्तर्गत राजनीतिक दलों ने कार्य किया। मेजी संविधान प्रारूप में जो विरोधाभास विद्यमान था उसका विवरण 1926 में संविधान विशेषज्ञ मिनोबे तात्सुकीशी ने निम्नलिखित शब्दों में किया है :

"हमारे संविधान का विकास इसके लेखकों की आशाओं के ठीक विपरीत तरीके से हुआ। संस्थात्मक तौर पर मन्त्रि परिषद (Cabinet) की व्यवस्था डायट के प्रति उत्तरदायी थी, लेकिन संविधान में उसका कोई स्थान न था लेकिन परम्परा के रूप में इसकी जड़ें मजबूती से स्थापित हो गई।" इस परिपाटी ने विकसित होने में समय लिया और यह केवल 1924 में उस समय लागू हुई जबकि आम चुनाव में जिस दल ने निचले सदन में बहुमत प्राप्त किया उसी ने मन्त्रि परिषद का गठन किया। इस मन्त्रि परिषद का नेतृत्व कातो काकाकि के द्वारा किया गया और इसे संवैधानिक सरकार की रक्षा करने वाली मन्त्रि परिषद के नाम से जाना गया। इस मन्त्रि परिषद ने दलगत सरकारों के युग का सूत्रपात किया। इस तरह जून 1924 से मई 1933 तक सभी प्रधान मन्त्रियों ने निचले सदन के बड़े दलों का प्रतिनिधित्व किया।

यहां पर ये प्रश्न उठते हैं कि राजनीतिक दलों ने निचले सदन में बहुमत प्राप्त राजनीतिक दल द्वारा सरकार बनाने के सिद्धान्त को अपनाने में इतना अधिक समय क्यों लिया? और फिर इस व्यवस्था का जीवन काल इतना संक्षिप्त क्यों रहा? इन प्रश्नों का जवाब गहराई से तलाशने के लिये हम उन कारणों की विवेचना करेंगे जो राजनीतिक दलों के गठन के लिये जिम्मेदार थे और तब उस स्थिति का जिसको इन दलों ने राज्य तन्त्र में प्राप्त किया।

22.2.1 राजनीतिक दलों का गठन

यह स्वीकार्य तर्क है कि तोकूगावा का शासन काल एक ऐसा अलोकतन्त्रीय ढांचा था जहां पर राजनीतिक सत्ता कड़े नियन्त्रण में थी। फिर भी आजकल विद्वान आधुनिकीकरण में जापान की सफलता के कारणों की तलाश करने में लगे हुए हैं। उनका तर्क है कि पश्चिमी देशों के लिये जापान के खुल जाने से पूर्व जापान ने न केवल आर्थिक कौशल एवं संस्थाओं को विकसित कर लिया था बल्कि एक ऐसे राजनीतिक तन्त्र को विकसित करना प्रारम्भ कर दिया था जिसके अन्तर्गत बहस एवं विवाद एक एकीकृत तत्व बन चुका था। शोंगुन ने एक निरकुंश शासक की भांति शासन नहीं किया बल्कि वह गैर-व्यक्तित्ववादी शक्ति के स्रोत का प्रतिनिधित्व करता था। निश्चय ही यह प्रवृत्ति समाज के एक छोटे गुट या वर्ग तक सीमित थी लेकिन सत्ता का उपयोग स्वेच्छाचारी न था और परिणामस्वरूप आधुनिक जापान एक संवैधानिक सरकार को अपना सका।

आइरोकावा दैकीशी जैसे विद्वान लोकतान्त्रिक विचारों के विकास को तोकूगावा काल में ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों के जनवादी आंदोलनों में खोजते हैं। इन आंदोलनों ने तोकूगावा राज्य के प्रभुत्व को चुनौती दी और राजनीतिक चेतना के प्रारम्भ की स्थितियों को जन्म दिया। इसी के साथ इन आंदोलनों ने उन सम्भावनाओं को जगाया जिनमें एक साथ मिलकर राज्य को दुरस्त करने के तरीकों को खोजा जा सके। यद्यपि ये आंदोलन न तो राजनीतिक तौर पर सफल हो सके और न ही तोकूगावा बाकूफू की सरकार को गिरा सके या इसका कोई विकल्प प्रस्तुत न कर सके। फिर भी इन्होंने उस परम्परा को बनाया

जिसकी बदौलत जनता के अधिकारों का आंदोलन लोकप्रिय निर्वाचित सभा की अपनी मांग के लिये दबाव डाल सका। मेजी पुनर्स्थापन का प्रारम्भ उस समय हुआ जबकि जापानी संस्थाओं तथा परम्पराओं में नाटकीय परिवर्तन हो चुका था। इस पुनर्स्थापन से एक केन्द्रीकृत राजनीतिक तन्त्र का निर्माण हुआ। इस विषय में पहले की इकाइयों में विवरण किया जा चुका है। यहां पर यह याद रखा जाना चाहिये कि राजनीतिक संगठनों एवं गुटों का निर्माण संवैधानिक सरकार की मांगों के लिये किया गया। उदाहरण के तौर पर सन् 1880 में कोची में **कोजूंशा** या गुम्मा में **युशिंशा** जैसी 150 स्थानीय सोसाइटियों ने एक राष्ट्रीय सभा की स्थापना की मांग की।

लेकिन दूसरी ओर मेजी सरकार ने एक ऐसे राजनीतिक तन्त्र के निर्माण को प्राथमिकता दी जिसे केन्द्रीय स्तर से ही चलाया जा सके और जहां पर नीचे से उठने वाले सामाजिक दबाव शासकों की इच्छाओं की सीमाओं में बने रहेंगे। लेकिन इसके बावजूद भी बहस होती रही और भिन्न-भिन्न विचारों का आस्तित्व बना रहा। मेजी शासक तन्त्र सम्राट की संप्रभुता को जनता द्वारा हड़पने से सुरक्षित रखना चाहता था। फिर भी तोकुगावा बाकूफू (बाकूफू सम्राट के नाम पर शासन कर चुका था) जैसी संस्था के, उद्भव को रोकने के प्रयास किये गये, जिसके परिणामस्वरूप राज्य के विभिन्न अंगों के बीच सत्ता का विसर्जन किया गया और उनमें से किसी के पास भी पूर्णरूपेण शक्ति नहीं रहीं। इस तरह से जहां एक ओर मेजी शासन, शाही प्रभुत्व के अधीन बहुत अधिक केन्द्रीकृत राज्य दिखायी पड़ता था वहीं दूसरी ओर प्रत्येक गुट या संस्था को पर्याप्त स्वायत्तता प्रदान की गई। सम्राट की प्रत्यक्ष प्रभुसत्ता का उपयोग सेना एवं नौकरशाही के द्वारा भरपूर तरीके से किया गया। हमें यहां पर यह याद रखना चाहिये कि संवैधानिक व्यवस्था का उपयोग जनता की स्वतन्त्रता की रक्षा के लिये नहीं अपितु सम्राट की संप्रभुता के लिये किया गया। राज्य की इन संस्थाओं में सामंजस्य बनाये रखने के लिये व्यवहार में शासक तन्त्र या हबात्सू का एक शक्तिशाली ताकत के रूप में उदय हुआ।

हंबात्सू या शासक तन्त्र मेजी पुनर्स्थापन के नेताओं से मिलकर बना था। ये लोग क्षेत्रीय समझौते से बंधे थे और उन्होंने मेजी काल में हुए रूपांतरण के समय में देश का नेतृत्व किया था। सतसुमा एव चोसू दोनों प्राथमिक महत्व के क्षेत्र थे और इन्हीं क्षेत्रों ने नौकरशाही, सेना, प्रिवी कौंसिल तथा हाउस ऑफ पीर्स के अधिकतर सदस्यों की आपूर्ति की। मेजी शासकों को बड़ा राजनयिक कहा जाता था और **साम्राज्यिक सदन में वे एक** संस्था के रूप में अपनी शक्ति का प्रयोग करते थे।

प्रतिनिधि सभा की रचना मेजी संविधान के अंतर्गत की गई थी और उसके महत्व पूर्ण-सदस्य मेजी शासक तन्त्र का विरोध करते थे। इनमें से कई सदस्य इस शासक तन्त्र के सदस्य रह चुके थे लेकिन वे इससे अलग हो गये थे। उन्होंने जनता के अधिकारों के आंदोलन में भाग लिया था और राजनीतिक दलों को संगठित किया था। मेजी शासक तन्त्र ने अपने-अपने राजनीतिक दलों के निर्माण के विचार का विरोध किया। प्रारम्भ में इतो हिरोबूमि, इन्नो कोरू आदि जैसे नेता अपने स्वयं के दलों को संगठित करना चाहते थे लेकिन बहुमत के द्वारा उनका विरोध किया गया।

संविधान की उद्घोषणा के समय तक अर्थात् 1889 तक ऐसे दो बड़े गुट थे जिनके आस-पास प्रथम राजनीतिक दलों को संगठित किया गया। इनागाकी तैसुके मेजी सरकार काउंसिलर के रूप में शामिल हुआ लेकिन उसने कोरिया पर आक्रमण करने के प्रश्न पर हुए मतभेदों के कारणवश 1873 में त्यागपत्र दे दिया। इतागाकी ने कोरिया पर आक्रमण करने की योजना का समर्थन किया था। उसने और उसके समर्थकों ने देशभक्तों की एक ऐसी पब्लिक पार्टी का गठन किया जिसने लोकतान्त्रिक तरीके से निर्वाचित राष्ट्रीय सभा के लिये अभियान चलाया। बाद में उसने सेल्फ-हेल्प सोसायटी (Self Help Society) के संगठन में भी मदद की। देश भक्तों की सोसायटी ने 1880 में पुनः नामकरण किया और 1881 में यह उदारवादी दल **(जियूतो)** हो गया।

जियतो ऐसा दल था जिसका समर्थन भूतपूर्व सामुराई तथा ग्रामीण प्रबुद्ध वर्ग के द्वारा किया गया लेकिन जनता के अधिकारों के आंदोलन के दौरान बढ़ती हिंसा को लेकर इस दल के नेता चिन्तित थे। जैसा कि पहले की इकाई में उद्धृत किया गया कि 1882-1886 के वर्षों में

होंशू के चिचिबू तथा कबासान जैसे केन्द्रीय भाग में हिंसात्मक घटनायें हुई और सरकार ने कठोरता के साथ इसका दमन किया। इसके फलस्वरूप सरकार ने इस दल पर प्रतिबंध लगा दिया तथा फिर 1890 के आमचुनावों के बाद तब इस दल का संवैधानिक उदार दल के रूप में **(रिक्केन जियतो)** सुधार किया गया।

हिजेन के सामंत ओकूमा शिगेनोबू को सन् 1881 में सरकार से त्यागपत्र देने के लिये बाध्य किया गया। उसके त्यागपत्र देने के पीछे अन्य कारणों के अलावा यह भी एक कारक था कि वह अति शीघ्र निर्वाचित सभा का अधिवेशन बुलाना चाहता था। ओकूमा ने ब्रिटिश व्यवस्था पर आधारित संसदात्मक व्यवस्था के प्रारूप का भी समर्थन किया। सरकार छोड़ने के बाद उसने संवैधानिक सुधार दल **(रिक्केन कैशिन्तो)** का गठन किया। इस दल ने शहरी मध्यम वर्ग का समर्थन प्राप्त किया। इस दल ने धीरे-धीरे लोकतांत्रिक सुधार के विचारों का प्रचार किया। ओकूमा ने इतागाकी के उदार दल में विलय करने से इंकार कर दिया लेकिन जैसे ही सरकार ने जनता के अधिकारों के आंदोलन का दमन करना शुरू किया वैसे ही ओकूमा ने दल को छोड़ दिया। आगे चलकर यह दल प्रगतिशील दल **(शिम्पोतो)** बन गया। यह दूसरा महत्वपूर्ण दल था।

इन ''जनता के दलों'' **(मिन्तों)** का संक्षिप्त रूप में एक ऐसे रूढ़िवादी गुट के द्वारा विरोध किया गया जिसको संवैधानिक साम्रज्यिक दल **(रिक्केन तेजैतो)** कहा जाता था। यद्यपि इसने राजनीतिक तौर पर कोई महत्वपूर्ण भूमिका अदा नहीं की लेकिन यह दल उस समय में विद्यमान सबसे अधिक प्रतिक्रियावादी शक्तियों का प्रतिनिधित्व करता था।

प्रथम डायट का उद्घाटन नवम्बर 1890 में किया गया 1898 में प्रथम दलीय मन्त्रि परिषद के गठन की यह विशेषता थी कि इस समय में दलों के एक शासक तन्त्र **(हाबत्सू)** के बीच गहमागहमी होती रही। कुछ सरकार समर्थक गुट भी थे और अक्सर इनका गठन होता रहता था। इन दोनों गुटों के द्वारा जिस समस्या का सामना किया गया वह यह थी कि मेजी संविधान के अधीन राजनीतिक दल केवल वार्षिक बजट को पारित होने से रोक सकते थे और इस तरह की स्थिति में पिछले वर्ष का बजट जारी रहता था। इन सबके बावजूद शासक तन्त्र इन राजनैतिक दलों के विरुद्ध कुछ भी नहीं कर सकता था जब तक वे मेजी संविधान को स्वीकार करते थे और इसी कारण से उन दोनों को साथ-साथ कार्य करना सीखना पड़ा। राजनीतिक दल निचले सदन पर नियन्त्रण रख सकते थे लेकिन ''पीर्स के ऊपरी सदन पर शासन तन्त्र और उनके समर्थकों के द्वारा नियन्त्रण किया जाता था। चीन-जापान युद्ध के शीघ्र बाद ही इन दोनों गुटों के द्वारा यह महसूस किया गया अर्थात् राजनीतिक दलों एवं शासक तन्त्र ने आपसी गठबंधनों को बनाना शुरू कर दिया।

22.2.2 समान स्वार्थ वाले समूह एवं राजनीतिक दल

शासक तन्त्र का विचार था कि दलीय सरकार किसी गुट विशेष के हितों के प्रतिनिधि के तौर पर कार्य करेंगे और वे चाहते थे कि मन्त्रि परिषद को राष्ट्रीय हितों का प्रतिनिधित्व करना चाहिये। इसलिये वे ''अतिश्रेष्ठ मन्त्रिमंडलों'' **(शोजेन नैकाकू)** की बात करते थे। फिर भी पारस्परिक मेल-मिलाप का तात्पर्य था कि उन विचारों में परिवर्तन हुआ जो शासक तन्त्र के बीच तथा जनता के दलों ''के बीच फैले हुए थे और इस तरह से जनता के दलों के बीच शासक तन्त्र की स्थिति के विरोध में फैले हुए विचारों में भी परिवर्तन हुआ। उदाहरण के तौर पर नवम्बर 1895 में सरकार ने उदार दल के साथ यह बंधन किया तथा इतागाकी तैसुके। (उदार दल का अध्यक्ष) सन् 1896 में इतो हिरो भूमि के मन्त्रिमण्डल में गृह मन्त्री बन गया। इस तरह से इसको शासक तन्त्र के समर्थकों के दल के विरुद्ध एक चुनौती माना गया और हिरोबूमि का विरोध करने के लिये वे यानागाता अरितोमों के इर्द-गिर्द एकत्रित हो गये।

जहां तक मन्त्रिमण्डल के गठन का प्रश्न है वह बड़े-बड़े राजनयिकों को लेकर बनाया गया और उन्होंने वैकल्पिक तौर पर या तो चोसू रियासत से या फिर सतसुमा से अपने प्रतिनिधियों को नामजद किया। इस तरह इतो चोसू से तथा मतसुकता मसायोशी सतसूमा से थे। इतो ने पार्टी के समर्थन से एक मन्त्रिमण्डल बनाने का प्रयास किया लेकिन इसका हाबत्सू के द्वारा विरोध किया गया। जून 1898 में **केनसैतो** नाम के दल का गठन पहले के

अन्य दलों के तत्वों को मिलाकर किया गया और यह एक ऐसी नयी शक्ति का प्रतिनिधित्व करता था जिसने शासक तन्त्र की ओर से एक भिन्न प्रकार की प्रतिक्रिया को पैदा किया। अन्ततः शासक तन्त्र ने **केनसैतो** को मन्त्रिमण्डल का गठन करने दिया।

इवागाकी एवं ओकूमा ने जून 1898 में केनसैतो के सदस्यों को मिलाकर मन्त्रिमण्डल का गठन किया और यह प्रथम दलीय मन्त्रिमण्डल था। इस दल का निचले सदन में 300 सदस्यों में से 244 सदस्यों के साथ पूर्ण बहुमत था। इस दो तिहाई बहुमत के बावजूद भी यह दल कमजोर स्थिति में था। इसके निम्नलिखित कारण थे–

- नौसेना एवं सेना के लिये जिन मन्त्रियों को नामजद किया गया उन्होंने दल का विरोध किया,
- इस दल का गठन दो ऐसे गुटों के विलय के द्वारा किया गया था जो कर बढ़ाने के प्रश्न पर विभाजित थे।

सैन्य खर्चों को पूरा करने के लिये सरकार को करों में वृद्धि करना आवश्यक हो गया था। जबकि दल ने भूमि करों में वृद्धि का विरोध किया किन्तु व्यापारिक एवं शहरी हितों वाले गुटों ने सरकार के इन प्रयासों का विरोध नहीं किया क्योंकि सरकार ने आर्थिक प्रसार तथा और अधिक सार्वजनिक खर्च की नीति का अनुसरण किया।

चार माह के अन्दर मन्त्रिमण्डल के पतन ने इन राजनीतिक गुटों के द्वारा किये गये गठबंधन के खोखलेपन को स्पष्ट कर दिया। इन गुटों ने कुछ चुनिंदा तथा अस्थायी कारणों से एक दूसरे के साथ गठबंधन किया था। पार्टी सिद्धान्तकारों के बीच अब यह विचार उभर रहा था कि हान्बात्सू तथा होशी तोरू के साथ सहयोग करना जरूरी हो गया था। **केनसैतो** ने हांबात्सू के साथ मिलकर कार्य करने का प्रयास किया। यामागाता ने नवम्बर 1898 में मन्त्रिमण्डल का गठन किया और भूमि कर बढ़ाने को अपना समर्थन दिया। वह दल जो अब तक लगातार भूमि करों में होने वाली वृद्धि का विरोध कर रहा था उसने रेल मार्गों के राष्ट्रीयकरण की मांग की सौदेबाजी की और इसके बदले में भूमि करों में होने वाली वृद्धि का समर्थन करने की पेशकश की। इस सौदेबाजी में शहरी व्यापारिक एवं वाणिज्यिकी हितों ने अधिक भूमिका अदा की।

राजनीतिक दलों पर अब तक ग्रामीण हितों का वर्चस्व कायम था और उन्होंने उस तरह की नीति का अनुसरण किया जो उनकी चिन्ताओं तथा हितों को प्रकट करती थीं। जबकि ये दल हांबात्सू के कड़े विरोधी थे लेकिन जब कभी भी आवश्यक हुआ तब उन्होंने इसके साथ समझौता किया। वे क्षेत्रीय एवं व्यक्तिगत वफादारियों को भी लेकर विभाजित थे। उदाहरण के तौर पर इतागाकी तोसा क्षेत्र से तथा दूसरे गुट क्यूशू या कान्तों से थे। इस क्षेत्रीय प्रतिद्वंद्विता एवं गुटबाजी ने एकता का मार्ग अवरुद्ध किया और गहरे विरोधों को जन्म दिया। दूसरी कमजोरी यह थी कि पीर्स के सदन में राजनैतिक दलों का कोई प्रतिनिधित्व न था और उनका स्थानीय राजनीति पर भी कोई नियन्त्रण न था क्योंकि सभी मुख्य अधिकारियों की नियुक्ति सरकार द्वारा की जाती थी। इस तरह से राजनीतिक दलों में विभाजन हुआ और वे आपसी कलह में व्यस्त हो गए। उनको शासक तन्त्र के विरोध का भी सामना करना पड़ा। इन शासक तन्त्र का मुख्य संस्थाओं पर नियन्त्रण था।

शहरी व्यापारिक गुटों के हितों का महत्व उन चुनावी कानूनों के संशोधन में निहित था जिनके द्वारा मत देने वाले एवं प्रत्याशी के लिये कर देने की योग्यता में कमी कर दी गई थी। इसके कारण मतदाताओं की संख्या में 1898 में 502,000 से 1900 में 989000 तक की बढ़ोतरी हुई। निर्वाचन जिलों के संशोधन का उन शहरी क्षेत्रों को लाभ हुआ जहां पर कुछ लोग ही प्रतिनिधि का चुनाव कर सकते थे। इस तरह से डायट में शहरी प्रतिनिधियों की संख्या में वृद्धि हुई।

सितम्बर 1900 में इसतो हीरोबूमि ने संवैधानिक सरकारी पार्टी के मित्रों को संगठित किया और इसको जापानी भाषा में **सेयूकाय** के नाम से पुकारा गया। यह इतो के उस लक्ष्य का प्रतिनिधित्व करती थी जिसके अनुसार वह यह तर्क प्रस्तुत करता था कि सरकार को अपनी स्वयं की पार्टी का गठन करना चाहिये जिससे वह निचले सदन पर अपना नियन्त्रण कायम कर सके।

गया। **केनसैतो** तथा यामागाता के बीच हुआ गठबंधन भी संक्षिप्त साबित हुआ और एक दल ने यह महसूस किया कि शासक तन्त्र के द्वारा कोई विशेष छूट दी जाने वाली नहीं। एक बार होशी तोरू ने यह महसूस किया कि यामागाता के साथ मिलकर काम करने से कुछ लाभ हो सकता है।

वह इतो के पास पहुंचा तथा उसके साथ मिलकर काम करने की इच्छा व्यक्त की। उनके हित एक सिक्के के दो पहलू थे। हांबात्सू तथा उन दलीय तत्वों के द्वारा **सेयूकाय** का गठन किया गया था जो राजनीति में स्थायित्व की तलाश में थे और 1920 के दशक तक इसका वर्चस्व बना रहा।

इतो हिरोबूमि का विरोध यामागाता ऐरितोमो के द्वारा किया गया। ऐरितोमो के राजनीतिक विचार भिन्न प्रकार के थे और उसका गुट शासक तन्त्र या हांबात्सू के अन्दर एक महत्वपूर्ण गुट था। **सेयूकाय**, यामागाता गुट तथा **केनसैहोन्तो** के बीच राजनीतिक सत्ता के लिये संघर्ष था। **कैनसे होन्तो शिम्पोतो** विचारधारा का अनुसरण कर रहा था। 1913 में यामागाता गुट के कातसूरा तारों ने मित्रों की संवैधानिक एसोसिएशन का गठन किया और 1916 में यह **केनसैकाय** संवैधानिक एसोसिएशन हो गई तथा इसने इतो की **सेयूकाय** का विरोध किया।

1904 के रूस-जापान युद्ध से 1912 तक राजनीतिक सत्ता यामागाता गुट के कातसुरा तारो तथा सायओनजी किमोशी के हाथों में बारी-बारी से रही। कानसुरा ने तीन मन्त्रिमण्डलों का नेतृत्व किया और किमोशी ने **सेयूकाय** का अध्यक्ष बनने पर दो बार मन्त्रिमण्डल का गठन किया।

इस समय **सेयूकाय** का सबसे महत्वपूर्ण नेता हारा ताकेशी था और वह प्रथम प्रधान मंत्री बनने वाला था। वह पार्टी का आदमी था और उसने **सेयूकाय** को एक ऐसी प्रभावशाली पार्टी बनाया कि उसका संगठन सम्पूर्ण जापान में फैल गया। अन्य राजनीतिक दलों के साथ मिलकर काम करने के स्थान पर उसने यामागाता के गुट के साथ राजनीतिक नीति के तहत गठबंधन करना उचित समझा। हारा और उसकी पार्टी **सेयूकाय** ने "सकारात्मक नीति" का अनुसरण किया। चीन-जापान युद्ध से पूर्व अन्य दलों ने सरकारी खर्च को सीमित करने का प्रयास किया जबकि हारा ने रेलवे लाइन निर्माण, बन्दरगाहों को सुधारने तथा सम्पर्क तन्त्र को और अधिक चुस्त बनाने के लिये सरकारी खर्च को बढ़ाने के प्रयास किये। इन खर्चों के कारण वित्त को स्थानीय समुदायों की ओर मोड़ा जा सका और सेयूकाय का प्रभाव बनाने में इस नीति ने मदद की। हारा ने हाऊस ऑफ पीर्स (House of Pears) में भी समर्थन बढ़ाने का प्रयास किया लेकिन इस नीति को 1920 में उस समय सफलता प्राप्त हुई जबकि पीर्स के अन्दर से ही कुछ गुट समर्थन करने के लिये आ गये।

हारा ने जहां एक ओर पार्टी को संगठित किया और उसके प्रभाव को बढ़ाया वहीं पर उसने आम मताधिकार की मांग का समर्थन नहीं किया। इस मांग को पहली बार 1910 में उठाया गया तथा पुन: 1919-20 में फिर उठाया गया और इस बार सारे देश में इस मांग के समर्थन में व्यापक तौर पर प्रदर्शन हुए। बुद्धिजीवियों के साथ-साथ श्रमिक एवं दलों के नेतागण भी इस आंदोलन में सक्रिय थे। हारा को इस मांग का समर्थन करने में सन्देह था क्योंकि उसका विचार था कि इससे जन दबाव बढ़ जायेगा। उसने सोचा कि इस तरह के निर्णय को धीरे-धीरे लागू किया जाये। इस आंदोलन के कारण सदन को भंग कर दिया गया और आम चुनाव में **सेयूकाय** दल सबसे बड़े दल के रूप में उभरा। विरोधी दलों ने शहरी क्षेत्रों में अपनी स्थिति में सुधार किया जिससे यह स्पष्ट हुआ कि सार्वभौमिक मताधिकार की मांग का शहरी क्षेत्रों में अधिक समर्थन था।

सेयूकाय तथा यामागाता गुट के बीच संबंधों में न तो स्थायित्व था और न ही निरंतरता। दबावों एवं खिंचावों के कारण उनके बीच मतभेद उभरते रहते थे। **सेयूकाय** की शक्ति के कारण यामागाता गुट इस पर निर्भर था। यह **सेयूकाय** विरोध गठबंधन को **कैसे होन्तों** के तत्वों एवं अन्य छोटे गुटों के साथ प्रभावशाली ढंग से बनाने मे असफल रहा। **सेयूकाय** के साथ गठबंधन करने के कारण **कैसेहोन्तों** में विभाजन हो गया जबकि अन्य गुटों ने यामागाता के साथ मिलकर काम करने के विचार का समर्थन किया। यह संतुलन 1912-1913 में उस समय टूट गया जबकि **नेशो** का राजनीतिक संकट पैदा हो गया था।

कुछ विद्वानों का मत है कि गठबंधन एवं सहयोग का यह प्रतिमान उस नीति का प्रतिनिधित्व करता था जिसको **जोई तोगो** या दो शक्तियों के बीच अन्तर्निहित पारस्परिक सहमति का नाम दिया गया। इसका तात्पर्य यह था कि सरकार की शक्तियों तथा राजनीतिक दलों के बीच एक अन्तर्निहित सहमति थी और उन्होंने इस सामान्यतः स्वीकृत किये गये मॉडल के अन्तर्गत कार्य किया। फिर भी यहां पर यह जानना अति महत्वपूर्ण है कि शासक तन्त्र दलीय राजनीति में और गहरा उतरता गया और कलसुश तारो ने **सेयूकाय** के प्रभुत्व को तोड़ने का प्रयास किया और उसने एक राजनीतिक दल का गठन भी किया। जापान में हो रहे परिवर्तनों के माध्यम से भी **हांबात्सू** की शक्ति में हुई कमी की अभिव्यक्ति हुई। मेजी शासन काल के प्रारम्भ में **हांबात्सू** एक ऐसा गुप्त एवं समरूपी गुट था जिसने समान उद्देश्यों के लिये संघर्ष किया और पुनस्थापन में उसने जो योगदान दिया उसके कारण उसे व्यापक समर्थन भी प्राप्त हुआ। लेकिन अब यह बिल्कुल भी सत्य न था और राजनीतिक सत्ता का उपयोग अब उन राजनीतिक दलों के द्वारा किया गया जो विरोधी हितों को जोड़ने एवं उनके बीच समझौता करने के लिये कार्य करते थे।

बोध प्रश्न 1

1) मेजी शासक तन्त्र का राजनीतिक दलों के प्रति क्या दृष्टिकोण था? इसका विवेचन लगभग 10 पंक्तियों में करें।

....
....
....
....
....
....
....
....
....
....
....
....
....

2) **जियूतो** का गठन कैसे हुआ? पांच पंक्तियों में उत्तर दें।

....
....
....
....
....

22.3 कम्युनिस्ट पार्टी की स्थापना

रूस-जापान युद्ध के बाद का काल जापान की आर्थिक सम्पन्नता का काल था। इसके साथ-साथ शहरीकरण तथा शिक्षा प्रसार में हुई वृद्धि के कारण अन्य दूसरे क्षेत्रों में हुई प्रगति के साथ-साथ बुद्धिजीवी वर्ग का भी विकास हुआ। उदाहरण के तौर पर 1905 में जापान में एक समाचार पत्र की 1,50,000 प्रतियाँ प्रकाशित होती थीं और 1922 में यह

संख्या बढ़कर 500,000 हो गई। शिक्षा एवं राजनीतिक चेतना में हुए प्रसार के कारण राजनीतिक विचारों में अभिव्यक्ति भी व्यापक स्तर पर हुई। इसकी पुष्टि लोकतन्त्र के विषय में राजनीतिक विचारों तथा राजनीतिक सहभागिता में हुई वृद्धि से भी होती है।

1882 में औरियंटल समाजवादी पार्टी का गठन किया गया लेकिन इस पर शीघ्र ही प्रतिबंद्ध लगा दिया गया। फिर भी समाजवादी विचारों का प्रसार होता रहा और अध्ययन केन्द्रों का निर्माण किया गया। अन्ततः सन् 1901 में सोशलिस्ट डेमोक्रेटिक सोसाइटी (**शकाय मिन्शुतो**) का गठन किया गया। इस तरह के विचारों एवं राजनीतिक दलों के उदय पर चिन्ता व्यक्त की गई और इन संगठनों की गतिविधियों का दमन करने के लिये 1900 में शांति बनाये रखने के कानून को पारित कर दिया गया। समाजवादी दलों ने पुनर्गठबंधन किये और 1906 में जापान की समाजवादी पार्टी (**निहोन शकायतो**) का उदय एक मूलगामी दल के रूप में हुआ तथा उसके नेता कोतोकू शूसूई जैसे लोग थे तथा कोतोकू ने सीधी कार्यवाही (Direct Action) की वकालत की। इस दल पर 1907 में प्रतिबंद्ध लगा दिया गया तथा कोतोकू एवं अन्य पर देशद्रोह के आरोप में मुकदमा चलाया गया।

1907 में कातायाम सेन जैसे उदार समाजवादियों ने सोशलिस्ट्स कामनर्स पार्टी का गठन किया लेकिन इस दल पर भी प्रतिबंध लगा दिया गया क्योंकि सरकार इस तरह के उदार विचारों को भी सहन करने के लिये तैयार न थी। वर्ग संघर्ष में और अधिक चेतना को उत्पन्न करने तथा एक समान समाज की स्थापना करने के लिये उग्रवादी कार्यवाही करने की आवश्यकता पर रूसी क्रान्ति का निर्णायक प्रभाव पड़ा। इसी कारण से 1922 में जापान की कम्युनिस्ट पार्टी की स्थापना हुई।

22.4 दलीय मन्त्रिमण्डल व्यवस्था

राजनीतिक दलों की शक्ति तथा घटनाओं को प्रभावित करने की उनकी क्षमता को गम्भीर रूप से सीमित कर दिया गया था। क्योंकि राजनीतिक जीवन में ऐसे बहुत से महत्वपूर्ण क्षेत्र थे जो उनके नियन्त्रण में न थे। इस सन्दर्भ में निम्नलिखित उदाहरण दिये जा सकते हैं:

- नौकरशाही एवं सैनिक सेवा प्रत्यक्ष तौर पर सम्राट के अधीन कार्य करती थी इसलिये वे राजनीतिक दलों के नियन्त्रण से मुक्त थीं।
- 1899 में अधिकतर सरकारी नौकरियों के लिये नागरिक सेवा परीक्षण को कानून के द्वारा अनिवार्य कर दिया गया।
- मेजी संविधान ने मेजी सम्राट को सेना पर नियन्त्रण प्रदान कर दिया था और 1899 से सक्रिय अधिकारी ही सेना एवं नौसेना के मन्त्री हो सकते थे और इस तरह से सैनिक कमाण्ड को अधिक नियन्त्रण प्राप्त था। सन 1912 में सेना ने इस शक्ति का प्रयोग सरकार गिराने के लिये किया। सेना मन्त्री यूहारा यासूकी ने इसलिये त्याग पत्र दे दिया था क्योंकि मन्त्रिमण्डल ने दो अन्य डिविजनों के निर्माण की सेना की मांग को मानने से इंकार कर दिया था। सरकार को इसलिये गिरा दिया गया क्योंकि सेना ने उत्तराधिकारी को नियुक्त करने से इंकार कर दिया।

1921 में हारा ताकेशी की हत्या कर दी गई और इसके बाद गैर-दलीय मन्त्रिमण्डलों का गठन हुआ। हारा के उत्तराधिकारी ने सात माह के बाद त्याग-पत्र दे दिया। कातों तोमासबूरो ने एक अनुभव विहीन मन्त्रिमण्डल का गठन किया और उसके बाद यामातो ने और कियोरा कैगो ने। कियोरा मन्त्रिमण्डल के दौरान **केन्सेकाय, सेयूकाय** तथा सुधार क्लब ने संविधान की रक्षा के लिये दूसरा आंदोलन शुरू किया और मई 1924 में आम चुनाव के समय उन्होंने कातो ताकि के नेतृत्व में एक संविद मन्त्रिमण्डल का गठन किया।

इस समय में कुछ सदस्यों ने **सेयूकाय** को छोड़ दिया और **रिक्केन मिनसैतो** (संवैधानिक

सुधार क्लब के सदस्य **सेयूकाय** में शामिल हो गये थे। इन दोनों दलों ने अर्थात **सेयूकाय** एवं **केन्सेकाय** ने मई 1932 तक वैकल्पिक तौर पर मन्त्रिमण्डलों का गठन किया जबकि 15 मई की घटनाओं में **सेयूकाय** प्रधान मन्त्री सूयोशिक की हत्या कर दी गई थी। इस काल को "दलीय शासन" कह कर उद्धृत किया गया है और यह "तैशो लोकतन्त्र" के पनपने का प्रतिनिधित्व करता है।

इस समय तक सैन्जी किन्मोशी को छोड़ कर बाकी उन सभी जेनरो का देहान्त हो चुका था जो राजनीतिक निर्णय करने वाले एवं सरकारों को तोड़ने वाले थे। राजनीतिक दलों ने अपनी शक्ति एवं अपने नियन्त्रण का विस्तार कर लिया था। मितानी तैशिरों ने तर्क दिया है कि ऐसी छः परिस्थितियां थी जिनके अन्तर्गत 1924-1932 तक दलीय मन्त्रिमण्डल का कार्य करना सम्भव हो सका। ये छः परिस्थितियां निम्नलिखित थीं:

i) 1924 तक डायट का निचला सदन मन्त्रिमण्डल पर नियन्त्रण करने वाली मुख्य शक्ति बन चुका था और यह "हाऊस ऑफ पीर्स" से कहीं अधिक शक्तिशाली था।

ii) संवैधानिक विशेषज्ञ मिनोबे तात्सूकिशि के विचारों ने दलीय शासन के लिये आधार उपलब्ध कराया। उसका कहना था कि साम्राज्यिक डायट राज्य का ऐसा अवयव नहीं है जिसको सम्राट के द्वारा शक्ति प्रदान की गई हो बल्कि "वह जनता की प्रतिनिधि है।" इस अवधारणा का अन्त करने के लिये उसने हाउस ऑफ पीर्स का चुनाव किया। मिनौबे के विचारों को नौकरशाही ने स्वीकार किया और उसके सिद्धान्तों को न्यायिक तथा नौकरशाही की सेवाओं के लिये होने वाली प्रवेश परीक्षा में शामिल कर लिया गया।

iii) 1888 में स्थापित की गई प्रिवी कौंसिल ने एक निर्णायक भूमिका अदा की और राजनीतिक दलों की शक्ति में होने वाली वृद्धि के विरुद्ध एक सुरक्षा का कार्य किया। यामागा कौंसिल का अन्तिम शक्तिशाली अध्यक्ष था और 1924 के बाद इसकी भूमिका में कमी आयी। अन्तिम जेनरो सैओंजी ने प्रिवी काउसिंल की भूमिका को कम करने में महत्वपूर्ण योगदान किया।

iv) राजनीतिक दलों तथा नौकरशाही के बीच एक दूसरे के साथ मिलकर काम करने की प्रवृत्ति बढ़ रही थी और दलों का नेतृत्व का तो तकाकी, तनाका गिशी, आदि जैसे भूतपूर्व नौकरशाहों द्वारा किया गया। इन नीति का प्रारम्भ हारा तकेशी के गम्भीर प्रयासों के कारण हुआ था तथा उसने दल–नौकरशाही संबंधों को और मजबूत किया।

v) न्यायपालिका पार्टी विरोधी थी लेकिन जूरी (न्यायपालिका) की व्यवस्था की स्थापना के द्वारा उस पर पार्टी का नियंत्रण हो गया। हारा ने न्यायपालिका के अधिकारियों से भी प्रगाढ़ संबंध बनाये और संरक्षण के द्वारा सैयूका के लिये उनके समर्थन को प्राप्त कर लिया और उन्होंने भी जूरी व्यवस्था का समर्थन किया जो 1923 में हारा की मृत्यु के बाद कानून बन गया।

vi) सेना तथा दलों के बीच के रिश्ते निर्णायक तौर पर महत्वपूर्ण थे। 1921-22 के वाशिंगटन सम्मेलन के साथ ही अन्तर्राष्ट्रीय स्थिति में हथियारों को कम करने के एक युग का प्रारम्भ हुआ और इसने सेना की प्रसार योजना पर एक कुठाराघात किया। इस सन्दर्भ में सैनिक अधिकारियों ने राजनीतिक दलों के सहयोग करने में अपना लाभ समझा। 1919 में तरोशी तथा 1922 में यामागाता जैसे नेताओं की मृत्यु के बाद तनाका गिशी जैसे सेना के नेताओं ने एक आधुनिक एवं तकनीकी तौर पर सर्वोच्च सेना के निर्माण के लिये सैयूका तथा हारा के साथ सक्रिय सहयोग करना शुरू कर दिया। इसी के साथ उन्होंने सुरक्षित की गई सेना की एसोसिएशनों के महत्व को बढ़ाने में मदद की। तनाका स्वयं सेयूका के काफी नजदीक हो गया तथा 1929 में अपनी मृत्यु तक इस पद पर बना रहा।

तनाका गिशी ही एकमात्र ऐसा नेता न था जो सेना के साथ मिल कर कार्य करना चाहता था। अन्य दूसरे नेता भी इस तरह की कार्यवाही का समर्थन करते थे और कई दूसरे ऐसे भी थे जो इस तरह की कार्यवाहियों का विरोध करते थे। उहारा युसाकू जैसे सेनापति इस तरह के सहयोग के विरोधी थे। वे सेना की निष्पक्ष और उसकी

महाद्वीप में आगे बढ़ने की नीति का समर्थन किया। इन विरोधों को नियन्त्रण में रखा गया और ये उसी समय अभिव्यक्त हो पाये जब कि 1930 में लन्दन नौसेना संधि को लेकर विवाद हुआ। मितानी तार्याशिरो के अनुसार इन सभी परिस्थितियों के कारण 1932 तक राजनीतिक दलों के द्वारा कार्य करना सम्भव हो सका, लेकिन एक बार जैसे ही इन परिस्थितियों में परिवर्तन होना शुरू हुआ, वैसे ही सरकार चलाना असम्भव हो गया।

22.5 राजनीतिक दलों का पतन

बहुत कारणों से राजनीतिक दलों का पतन हुआ और उनमें कुछ विशेष महत्वपूर्ण कारणों का हम इस भाग में विवेचन करेंगे।

22.5.1 बाह्य एवं आन्तरिक कारण

राजनीतिक दलों के प्रभाव में कमी अन्तर्राष्ट्रीय स्थिति में हुए बदलाव एवं उन घरेलू दबावों के कारण आयी थी जिनसे सैन्यवादियों के हाथ मजबूत हुए। बाहय तौर पर आर्थिक मंदी ने जापान में सामाजिक तनावों को बढ़ावा दिया और बढ़ते चीनी राष्ट्रवाद ने भी जापानी हितों पर दबाव डाला। चीन में च्यांग काई शेक की ताकत में वृद्धि हो रही थी और जापान ने महसूस किया कि मंचूरिया में उसके हितों को खतरा हो गया था। वाशिंगटन की व्यवस्था ने बड़ी शक्तियों के बीच सहयोग एवं मेल-मिलाप के वातावरण को पैदा किया, लेकिन इसके महत्व को कम करके आंका गया और जापान ने पुनः सोचा कि उसके हितों की पर्याप्त तौर पर सुरक्षा नहीं की गई।

सेना के प्रभाव एवं शक्ति का प्रसार हो रहा था और इससे राजनीतिक दलों के प्रभाव में कमी आई।मंचूकूओं की स्थापना ने सेना की स्वतन्त्रता को स्पष्ट कर दिया। कृषि में आयी मंदी के कारण आन्तरिक स्थिति और जटिल हो गई तथा इसी के साथ-साथ यह भावना भी बलवती होती जा रही थी कि धनी एवं बड़े व्यापारियों को आर्थिक नीतियों से लाभ हो रहा था।

इन घटनाओं ने व्यापक आलोचना एवं वाद-विवाद को जन्म दिया। आलोचना सीधे-सीधे राजनीतिक दलों की कमजोरी एवं उनके भ्रष्टाचार के विरुद्ध थी। लेकिन जिस संकट का सामना राष्ट्र कर रहा था तथा इसका हल कैसे किया जा सकता था– इन पर अधिकतर वाद-विवाद केन्द्रित था। मई 1932 में राजनीतिक दलों ने प्रधानमंत्री के पद को खो दिया और 1941 तक उनको मन्त्रिमण्डल में कोई स्थान न मिला। दलीय शासन में तेज़ी से आई गिरावट और उसका अन्त इन बाहय एवं आन्तरिक परिवर्तनों की उपज था। जहां एक ओर इस दशक में एक नये व्यापारिक प्रबुद्ध वर्ग की शक्ति का उदय हुआ वहीं इसी के साथ-साथ नागरिक एवं सैनिक नौकरशाही की शक्ति में भी वृद्धि हुई। इसी दशक में राष्ट्रीय नीति का निर्माण करने के प्रयासों के कारण भी तनाव पैदा हुए।

1926 में जापान में घरेलू अर्थव्यवस्था में मंदी व्याप्त थी और इसी के साथ-साथ 1927 में बैंक संकट पैदा हो गया। इनके कारण सरकार को बाध्य हो कर निम्नलिखित कदमों को उठाना पड़ा:

- सरकार के खर्चों में कटौती की गई,
- स्वर्ण स्तर की ओर वापस लौटा गया, और
- उद्योग को व्यवस्थित एवं मशीनीकृत किया गया।

1929 की मंदी के साथ स्थिति और बिगड़ गई क्योंकि इसके कारण आमदनी में कमी आयी और बेरोजगारी बढ़ी। ग्रामीण क्षेत्रों को जबरदस्त आर्थिक भार का सामना करना पड़ा आर 1934 में कुछ क्षेत्रों में खराब फसल हो जाने से संकट और गहरा हो गया।

हामागुशी के नेतृत्व में **मिसेटो** की सरकार की असफलता तथा लन्दन में नौसेना सम्मेलन में इसकी असफलता (जापान अपनी नौसेना के जहाज माल पर कोई सीमांकन स्वीकार नहीं करना चाहता था लेकिन इसको स्वीकार करने के लिये उसे बाध्य किया गया) के कारण 1930 में **हामागुशी** की हत्या कर दी गई। आगामी वर्षों में प्रतिक्रियावादी गुट का राजनीति में महत्व बढ़ गया और उनकी आतंकित करने वाली नीतियों का वर्चस्व कायम हो गया। ये गुट उस संकट की अभिव्यक्ति मात्र थे जिसका सामना राष्ट्र कर रहा था और ये राजनीतिक दलों की नीतियों से उपजे असन्तोष की अभिव्यक्ति भी थे। उनके द्वारा राष्ट्र हित में किये गये निःस्वार्थ कार्यों की प्रशंसा की गई थी किन्तु उन्होंने इनकी भी अवमानना की।

इस वातावरण में सेना के अधिकारियों ने क्वांग तुग सेना का नेतृत्व किया तथा 1931 में मंचूरिया की घटना को उकसाया। उन्होंने सोचा कि मंचूरिया में जापान के हितों को खतरा था। 1932 में मंचूरिया एक स्वतन्त्र राज्य हो गया तथा इस पर एक तरह से जापान का अधिकार हो गया। संयुक्त राष्ट्र लीग ने इस के अधिग्रहण का विरोध किया। लेकिन वाकात्सूकी मन्त्रिमण्डल इस विषय में कुछ भी करने में असमर्थ था बल्कि इस मन्त्रिमण्डल के कई सदस्यों ने सेना की इस कार्यवाही का समर्थन किया। इनूकाय त्यूसोशी वाकात्सूरी का उत्तराधिकारी बना। इनूकाय सेयूकाय का अध्यक्ष था तथा वह अन्तिम दलीय प्रधान मन्त्री था। इनूकाय के द्वारा चीनियों के साथ बातचीत तथा बिगड़ती आर्थिक स्थिति ने जापान में आतंकवाद के लिये माहौल को परिपक्व किया और 15 मई, 1932 को इनूकाय की हत्या कर दी गई।

राष्ट्रीय आपातकालीन स्थिति में अगले मन्त्रिमण्डल का गठन हुआ और इसका गठन एडमिरल सेतो मकोतो के द्वारा किया गया। सेतो का चुनाव अन्तिम **जेनरो** सायओजि के द्वारा किया गया। राजनीतिक दलों ने इस आशा के साथ नये मन्त्रिमण्डल का समर्थन किया कि वे अपनी स्थिति को पुनः प्राप्त कर लेंगे। लेकिन उसका अनुसरण 1934 में एडमिरल ओकाडा कैसूके ने किया। राजनीतिक दलों की असफलता का कारण नौकरशाही एवं सेना का बढ़ता प्रभाव था। नौकरशाही तथा विशेषकर गृह मंत्रालय ने अर्थव्यवस्था को दुरस्त करने के कार्यक्रम का संचालन किया और इसके कारण इसका जनता पर भी प्रभाव बढ़ने लगा।

इन घटनाओं से सेना को भी लाभ हुआ। सेना के योजनाकर्ता अब देश की सामाजिक-आर्थिक ताकत के महत्व के प्रति सजग थे और युद्ध की स्थिति में वे देश की सम्पूर्ण शक्ति एवं संसाधनों को गतिशील कर सकते थे। इस तरह से उन्होंने "राष्ट्रीय गतिशीलता" पर अपना ध्यान केन्द्रित किया। इन बहुत से उद्देश्यों की प्राप्ति के लिये सरकार ने ऐसी एजेंसियों का निर्माण किया जिन्होंने मन्त्रालयों की सभी सीमाओं को लांघ दिया। सन् 1933 में मन्त्रिमण्डल शोध ब्यूरो का निर्माण नागरिक सेवाओं तथा सेना के विशेषज्ञों को मिलाकर किया गया। इन नये संबंधों के कारण दलों के हितों को नुकसान पहुंचा।

राजनीतिक दलों के महत्व के पतन की अभिव्यक्ति उद्योग तथा नौकरशाही से होने वाली नयी भर्ती की कमी में भी हुई। पुराने नेताओं की हत्या कर दी गई थी और नया कोई आगे आ नहीं रहा था। **सेयूकाय** में अपने स्वयं के विरोध के कारण भारी पतन हुआ और फरवरी 1926 में हुए चुनाव में उसके केवल 176 सदस्य निर्वाचित हो पाये और 126 पराजित हो गये। गोर्डन बर्गर का कथन है कि फरवरी 1936 से जुलाई 1937 के बीच मेजी राजनीतिक व्यवस्था को परिवर्तित करने के लिये जबरदस्त दबाव डाले गये। संघर्षों को हल करने तथा एक दूसरे के प्रतियोगी हिस्से में सहयोग करने के प्रयासों को राजनीतिक दलों के द्वारा सम्पन्न किया जाता था लेकिन अब ऐसा करने की शक्ति उनके पास न थी। इस तरह की स्थिति में अन्य गुटों ने ऐसी संस्थाओं को बनाने का प्रयास किया जो इन तरह के कार्यों को पूरा कर सकें।

22.5.2 राष्ट्रीय रक्षा राज्य (नेशनल डिफेंस स्टेट)

"राष्ट्रीय रक्षा राज्य" (**कोकूबो कोक्का**) बनाने से तात्पर्य देश को एक पूर्ण युद्ध के लिये तैयार करना था और इस योजना का अनुमोदन सेना तथा नौकरशाही के द्वारा किया गया।

मंत्रिमण्डल शोध ब्यूरो—मन्त्रालयों से ऊपर सर्वोच्च संगठन को बनाने के उनके प्रयास जबरदस्त विरोध के कारण सफल न हो सके। अगली सरकार ने व्यापारी वर्ग एवं सेना के मध्य कुछ सहयोग करने का समय समझा और उस समय उसको "वित्त के साथ गठबंधन" का नाम दिया गया। इस गठबंधन में राजनीतिक दलों को पूर्णतः अलग रखा गया और जब भी राजनीतिज्ञ मन्त्रिमण्डल में शामिल हुए तभी उनको दल से त्यागपत्र देना पड़ा।

राजकुमार कोनोइ फूमीमारो के मन्त्रिमण्डल ने अर्थव्यवस्था को मजबूत करने के लिये नयी आर्थिक नीतियों को लागू करने के कार्य को जारी रखा। इस स्थिति में उन्हें असमंजस का सामना करना पड़ा। क्योंकि विकास कार्यों के लिये धन जुटाने हेतु कर लगाना आवश्यक था लेकिन मंदी के कारण इस तरह के करों का जनता के द्वारा विरोध किया जाता। इसलिये उन्होंने जनता को गतिशील करने या राज्य की सुरक्षा पर जोर देने के लिये सरकारी दलों का उपयोग किया। उन्होंने किसी भी प्रकार की असहमति का दमन किया।

1937 में जापान चीन के साथ युद्ध करना चाहता था और जापान के कई नेताओं ने सोचा कि चीनी राष्ट्रवाद को कुचलने का यह सुअवसर है। आन्तरिक तौर पर इस योजना के समर्थन में जनता को गतिशील किया गया तथा इसके विरोध को और कम कर दिया। मन्त्रिमण्डल ने इस एकता का उपयोग अपनी नीतियों को जारी रखने के लिये किया लेकिन संसाधनों को युद्ध की ओर अग्रसर कर दिये जाने से आर्थिक योजनाओं को लागू कर पाना असम्भव हो गया। अब बहुत से प्रबुद्ध वर्गों के बीच संघर्ष और गहरा हो गया। कोनोइ का उत्तराधिकार हिरोमा किशीरा और उसके बाद थोड़े समय के लिये एबे नोबूयूकी मन्त्रिमण्डल द्वारा किया गया। इस मन्त्रिमण्डल को भी निचले सदन के द्वारा हटाया गया क्योंकि निचले सदन में स्थापित दलों के खिलाफ असन्तोष बढ़ रहा था।

घरेलू राजनीतिक व्यवस्था में होने वाले सुधारों की प्रवृत्ति पर सेना का वर्चस्व था तथा सेना भी अपने राजनीतिक सहयोगी की तलाश में थी। अन्ततः उन्होंने कोनो फूमिमारो के साथ समझौता कर लिया। कोनो ने एक ऐसी योजना को तैयार किया जिसके द्वारा बजट घाटे से ग्रस्त मेजीराज्य बाहर निकल जायेगा और "राष्ट्रीय लामबंद राज्य" (नेशनल मोबिलाइजेशन स्टेट) की स्थापना करना सम्भव हो सकेगा। 26 जुलाई 1940 को उसके नेतृत्व में सरकार ने "मूलभूत राष्ट्रीय नीतियों के प्रारूप" को अपनाया। यह नीति एक नियन्त्रित अर्थव्यवस्था तथा राजनीतिक तौर पर वफादार जनता को तैयार करने के लिये थी। सरकार ने अपनी प्रसारवादी नीतियों को और अधिक निश्चय के साथ जारी रखा क्योंकि उनको लगातार आर्थिक नाकेबंदी का भय था। 12 अक्टूबर 1940 को इम्पीरियल रूल एसिसटेन्स एसोशियसन (आई.आर.ए.ए.) का गठन किया गया और ऐसा एक नई व्यवस्था के लिये एक राजनीतिक दल के रूप में किया गया। जबकि राजनीतिक दलों को भंग कर दिया गया था तब आई.आर.ए.ए. एक सही अर्थों में राजनीतिक दल न बन सका और यही जनता को लामबद करने वाली एक सरकारी एजेन्सी बन गई। जापान को एक प्रसारवादी शक्ति बनाने के उद्देश्य को पूरा करने हेतु बनायी गयी बहुत सी संस्थायें सफल न हो पायी तथा मेजी सरकार के अधीन पुरानी संस्थाओं एवं मन्त्रालयों की स्थापना का कार्य जारी रहा। दूसरे विश्व युद्ध का उपयोग एक सार्वभौमिक विचारधारा को बनाने तथा असहमति को दबाने के लिये होना था लेकिन गोर्डन बर्नर के अनुसार वे नयी केंद्रीय व्यवस्था को बनाने में असफल रहे। जनरल तोजो के मन्त्रिमण्डल के अधीन राजनीतिक प्रतियोगिता विद्यमान थी और यह पहले की तरह थी। 1945 में आत्मसमर्पण करने का निर्णय इस व्यवस्था के धराशायी होने का प्रतीक था। राजनीतिक प्रबुद्ध वर्ग ने सम्राट से हस्तक्षेप की मांग की। सम्राट राजनीतिक व्यवस्था से पृथक बना रहा था।

बोध प्रश्न 2

1) जापान में समाजवादी विचारों के विकास का वर्णन कीजिये। उत्तर 10 पंक्तियों में दें।

....

....

....
....
....
....
....
....
....
....

2) वे कौन सी छः परिस्थितियां थीं जिनके कारण 1924-1932 तक दलीय मन्त्रिमण्डल के लिये कार्य करना सम्भव हो सका? 15 पंक्तियों में उत्तर दें।

....
....
....
....
....
....
....
....
....
....
....
....
....
....
....

3) जापान में दलीय मन्त्रिमण्डल के पतन के कारणों को बताइये। उत्तर 10 पंक्तियों में दें।

....
....
....
....
....
....
....
....
....

22.6 सारांश

जापान में दलीय सरकार का उत्थान एवं पतन एक जटिल प्रक्रिया थी। यह जानना

महत्वपूर्ण है कि मेजी शासन तन्त्र द्वारा निर्मित संवैधानिक सरकार को दलीय सरकार का मूलरूप से विरोध करना पड़ा। इस तरह के शत्रुतापूर्ण वातावरण में राजनीतिक दलों तथ उनके समर्थकों को जहां एक ओर अपनी देशी परम्पराओं से शक्ति प्राप्त करनी पड़ी वहीं पर उन्होंने पश्चिमी विचारों का भी सहारा लेते हुए एक ऐसी व्यवस्था को बनाया जिसके अन्तगर्त वे कुछ शक्ति का उपयोग कर सके। लेकिन वे ऐसा तभी कर पाये जबकि उन्होंने मेजी शासन तन्त्र के साथ समझौता किया।

मेजी शासन तन्त्र ने यह भी समझ लिया था कि यदि वे संवैधानिक ढांचे के अन्तर्गत सरकार का संचालन करेंगे तब उनको राजनीतिक दलों की सहमति प्राप्त करनी होगी। इस तरह दलीय सरकार मूलभूत परिवर्तनों को न ला सकी और उनको मेजी व्यवस्था के अन्तर्गत ही काम करना पड़ा।

समाजवादी, साम्यवादी और अन्य उग्रवादी गुट कोई व्यापक आधार वाला जन आंदोलन संगठित करने में असफल रहे। लेकिन उन्होंने महत्वपूर्ण कार्य किया और सफलतापूर्वक उन लोगों की समस्याओं को उठाया भी जो औद्योगिक विकास के कारण समस्याओं का सामना कर रहे थे।

सेना डायट के नियन्त्रण से मुक्त थी और इसका स्वतन्त्र अस्तित्व था। जापान के सुरक्षा हितों के प्रति सेना का जो दृष्टिकोण था उसके फलस्वरूप सेना ने धीरे-धीरे लोकतान्त्रिक प्रक्रिया के महत्व को कम किया और उन दलीय मन्त्रिमण्डलों को हटा दिया जिन्होंने सेना के विचारों को मानने से इंकार किया। लेकिन इन सबके बावजूद वास्तविक तौर पर सर्व-सत्तावाद की व्यवस्था को न लादा जा सका और इसके चरमोत्कर्ष के समय में भी राजनीतिक प्रतियोगिता निरन्तर जारी रही। ऐसा इसलिये हुआ कि जापानी "फासीवाद" का चरित्र यूरोप में स्थापित फासीवाद से भिन्न था।

जापान में "फासीवाद" था या नहीं यह एक बड़ी बहस का विषय है और अधिकतर पश्चिमी विद्वान इस विचार का अनुसरण नहीं करते। (देखें इकाई 25) न यह ही कहा जाता है कि यह व्यवस्था लोकतन्त्रवादी नहीं थी और जापान विदेशों के साथ सैन्यवाद दु:स्साहस की नीति का अनुसरण नहीं कर रहा था। अन्ततः यह समझा जाना चाहिये कि मेजी ढांचे में दलीय व्यवस्था एकीकृत हो चुकी थी और इतने प्रतियोगी हितों को अपनी प्रतियोगी मांगों के लिये बात चीत करने की अनुमति प्रदान की।

22.7 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न 1

1) देखें भाग 22.2
2) अपने उत्तर का आधार भाग 22.2 को बनायें

बोध प्रश्न 2

1) भाग 22.3 को उद्धृत करें
2) देखें उपभाग 22.3.1
3) देखें भाग 22.4